॥ ॐ ह्रीं श्री कल्याण पार्श्वनाथ स्वामिने नमः ॥

॥ श्रीमद् आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ वर्तमान पट्टधर गच्छाधिपति श्रुतभास्कर आचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरन्धर सूरीश्वर सद्गुरवे नमः ॥

100 परमार क्षत्रियोद्धारक गुरु श्री इन्द्रदिन्न सूरि जन्म शताब्दी वर्ष 1923 - 2023

100 परमार क्षत्रियोद्धारक गुरु श्री इन्द्रदिन्न सूरि जन्म शताब्दी वर्ष 1923 - 2023

घर घर पाठशाला

8-16 साल के बालक-बालिकाओं के लिए

शुभ आशीर्वाद प्रदाता

गुरु आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरि म.सा. के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति

श्रुतभास्कर जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरधंर सूरीश्वर जी म.सा.

सद्प्रेरणा

गणिवर्य श्री धर्मरत्न विजय जी म.सा.

शुभ निश्रा प्रदाता

प.पू प्रवर्तनी साध्वी श्री अभय श्री जी म.सा की सुशिष्या

साध्वी श्री कल्पज्ञा श्री जी म.सा आदि ठाणा-6

आयोजक - भगवान श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन नवयुवक मंडल, लुधियाना

संचालन समिति - श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन मंदिर, किचलू नगर, लुधियाना

निवेदक- श्री आत्मानंद जैन सभा (रजि.), लुधियाना

नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं
अरिहंत भगवंतों को नमस्कार हो।

नमो सिद्धाणं
सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो।

नमो आयरियाणं
आचार्य महाराजों को नमस्कार हो।

नमो उवज्झायाणं
उपाध्याय महाराजों को नमस्कार हो।

नमो लोए सव्वसाहूणं
लोक में विद्यमान सब साधु महाराज को नमस्कार हो।

एसो पंच-नमुक्कारो
इन पांचों को किया हुआ नमस्कार

सव्व-पावप्पणासणो
सर्व पापों का नाश करने वाला है।

मंगलाणं च सव्वेसिं
और सब मंगलों में,

पढमं हवइ मंगलं
यह प्रथम अर्थात् श्रेष्ठ मंगल है।

गुरु स्तुति

भवोदधि-तारणपोत, मात त्रिशलासुत वंदो ।
हे जी, तपागच्छ- श्रीकार, पाट वंदी आणंदो ।।

परतिख शारदपूत, आतमानंद सूरिरायो।
हे जी, मिथ्यामत परिहार, शुद्ध मारग अपनायो ।।

युगद्रष्टा कोहिनूर, विजय वल्लभ सूरिराजे ।
हे जी, जिनआणाप्रतिबद्ध, सुजस महीतल गाजे ।।

निर्मल निश्चल संत, समुद्र सूरि जग सोहे ।
हे जी, समता साधक गुरूराय, मुक्ति-सोपान आरोहे ।।

क्षत्रियकुल-प्रतिबोध, वीर वाणी प्रसरावे ।
हे जी, इन्द्रदिन्न सूरिदेव, जयकमला जग पावे ।।

तस पट्टे केसरी सिंह, रत्नाकर सूरि प्रतापी ।
हे जी, प्रखर संयम तपतेज, शिथिलता थर-थर कांपी ।।

संप्रति धर्मधुरंधर, चउविहसंघ धुरा-धोरी ।
हे जी, जयवंत सुधर्मापाट, 'आशिष' मांगे कर जोरी।।

गुरु वंदन विधि

गुरु-दर्शन करते ही पहले दोनों हाथ जोड़कर और मस्तक झुकाकर "मत्थएण वन्दामि" कहना चाहिये।

(सर्वप्रथम दो बार पंचांग खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(सुगुरु सुखसाता पृच्छा सूत्र)

(इस सूत्र को खड़े होकर बोलें)

इच्छकार, सुहदेवसि (सुह-राई), सुख-तप, शरीर निराबाध, सुख - संयम यात्रा निर्वहते हो जी ? स्वामी साता है जी ? आहार पानी का लाभ देना जी ।

(एक बार पंचांग खमासमण देना)

(तीसरा खमासमण पदवीधारी गुरु भगवंत को दी जाती है)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

अब्भुट्ठिओमि सूत्र (गुरु- क्षमापणा)

(इस सूत्र को खड़े होकर बोलें)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर देवसिअं (राइयं) खामेउं ? (गुरुदेव द्वारा "खामेह" कहने के बाद बोलें)

इच्छं, खामेमि देवसिअं (राइयं)

(फिर दोनों घुटनों के बल बैठ कर दायां हाथ जमीन पर तथा बायां हाथ मुख के आगे रखते हुए मस्तक झुका कर नीचे का पाठ बोलें)

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरि भासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा। तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए,

मत्थएण वंदामि।

सबसे अंत में विनय पूर्वक पूछें "सुखसाता साहिब जी ?"

(नोट- सुबह से दोपहर 12 बजे तक "सुहराई" और 12 बजे से शाम तक "सुहदेवसी" बोलना चाहिए)

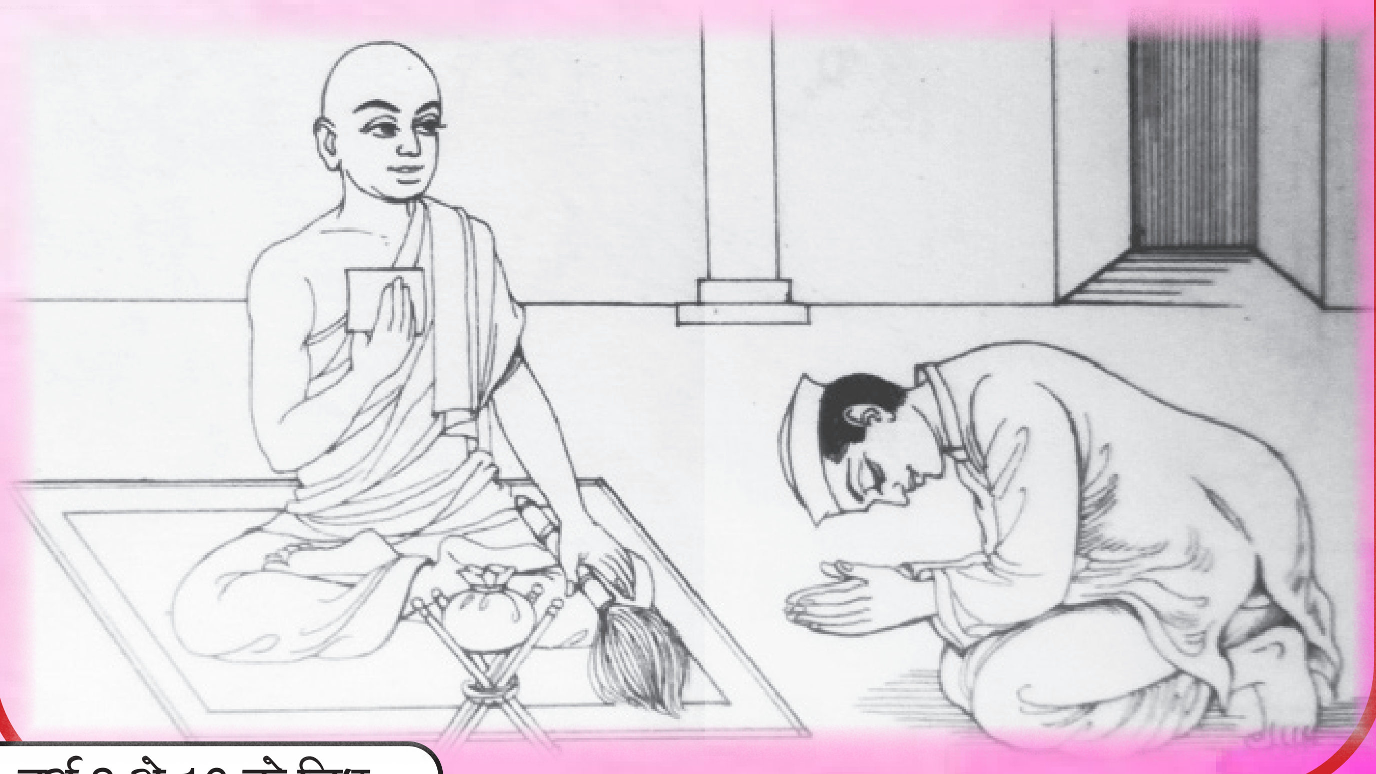

24 तीर्थंकरों के नाम एवं लांछन

Symbols & Names of 24 Tirthankaras

S.no	Name	Symbol	Image
1.	श्री ऋषभदेव जी Sh. Rishabhdev ji	बैल Bull	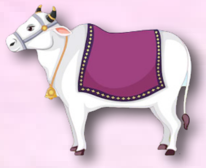
2.	श्री अजितनाथ जी Sh. Ajitnath ji	हाथी Elephant	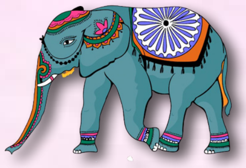
3.	श्री संभवनाथ जी Sh. Sambhavanath ji	अश्व (घोड़ा) Horse	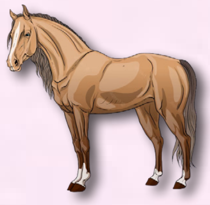
4.	श्री अभिनंदननाथ जी Sh. Abhinandan Swami ji	बंदर Monkey	
5.	श्री सुमतिनाथ जी Sh. Sumatinath ji	क्रौंच पक्षी Curlew	
6.	श्री पद्मप्रभ जी Sh. Padamprabh ji	कमल Red Lotus	
7.	श्री सुपार्श्वनाथ जी Sh. Suparashwanath ji	साथिया (स्वस्तिक) Swastik	
8.	श्री चन्द्रप्रभु स्वामी जी Sh.ChandraPrabh Swami ji	चन्द्रमा Moon	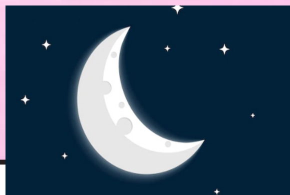

S.no	Name	Symbol	Image
9.	श्री सुविधिनाथ जी Sh. Suvidhinath ji	मगर मच्छ Crocodile	
10.	श्री शीतलनाथ जी Sh. Shitalanath ji	श्रीवत्स Srivatsa	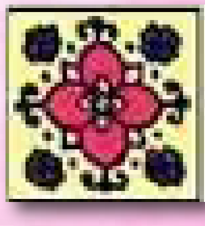
11.	श्री श्रेयांसनाथ जी Sh. Shreyansnath ji	गैंडा Rhinoceros	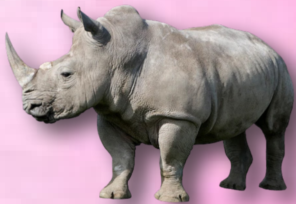
12.	श्री वासुपूज्य जी Sh. Vasupujya ji	भैंसा Buffalo	
13.	श्री विमलनाथ जी Sh. Vimalnath ji	शूकर / सूअर Boar	
14.	श्री अनंतनाथ जी Sh. Ananthnath ji	बाज Falcon	
15.	श्री धर्मनाथ जी Sh. Dharmanath ji	वज्रदंड Vajra	
16.	श्री शांतिनाथ जी Sh. Shantinath ji	मृग (हिरण) Deer	

S.no	Name	Symbol	Image
17.	**श्री कुंथुनाथ जी** Sh. Kuntunath ji	**बकरा** He-Goat	
18.	**श्री अरनाथ जी** Sh. Arnath ji	**नंदाव्रत** Nandavrat	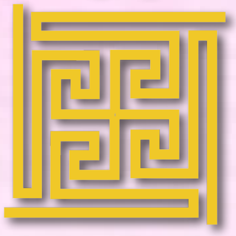
19.	**श्री मल्लिनाथ जी** Sh. Mallinath ji	**कलश** Water port	
20.	**श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी** Sh.Munisuvrat Swami ji	**कछुआ** Tortoise	
21.	**श्री नमिनाथ जी** Sh. Naminath ji	**नीलकमल** Blue Lotus	
22.	**श्री नेमिनाथजी** Sh. Neminath ji	**शंख** Conch	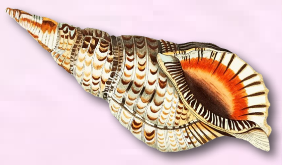
23.	**श्री पार्श्वनाथ जी** Sh. Parswanath ji	**सर्प** Serpent /Snake	
24.	**श्री महावीर स्वामी जी** Sh. Mahavir Swami ji	**सिंह** Lion	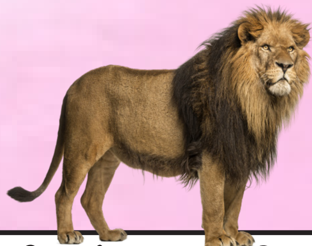

प्रभु के पांच कल्याणक

च्यवन कल्याणक

जन्म कल्याणक

दीक्षा कल्याणक

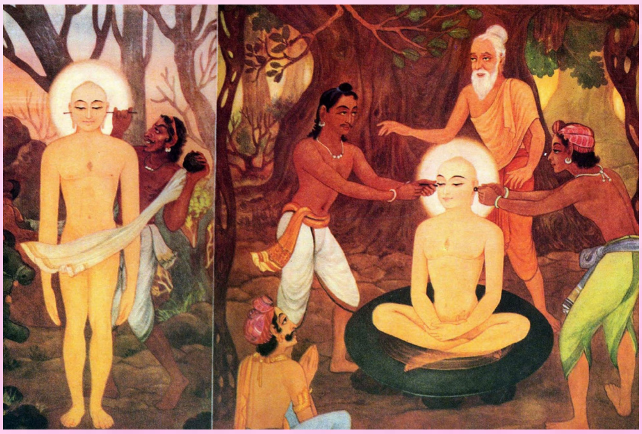

केवल ज्ञान कल्याणक

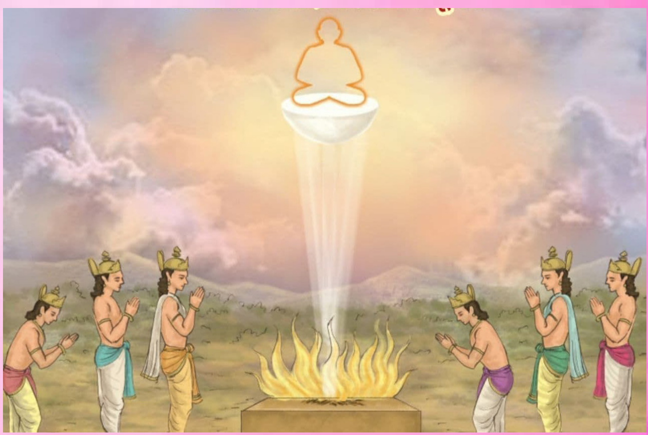

निर्वाण / मोक्ष कल्याणक

रत्नत्रयी

सम्यक दर्शन

सम्यक ज्ञान

सम्यक चरित्र

तत्त्वत्रयी

देव - गुरु- धर्म

सुह - देव

सुह- गुरु

सुह- धर्म

सामायिक लेने के पाठ विधिसहित

सर्वप्रथम चरवले से भूमि साफ कीजिए, फिर चौकी आदि उच्च स्थान पर ठवणी रख कर उसके ऊपर जिस धार्मिक पुस्तक में नवकार मंत्र और पंचिंदिय (स्थापना सूत्र) हो वह पुस्तक और जपमाला (नवकार वाली) रखकर और स्वयं चार बालिश्त (ढ़ाई से तीन फुट) पीछे हट कर अपना आसन बिछाइये और उसके ऊपर चौकड़ी (पालथी) लगाकर बैठिये और चरवले की डंडी अपने बाएं घुटने पर रखिये। दाहिने हाथ को औंधा कर ठवणी के सन्मुख रख कर एक 'नवकार मंत्र' तथा 'पंचिंदिय' के पाठ से स्थापना स्थापन करिये, जैसा की नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

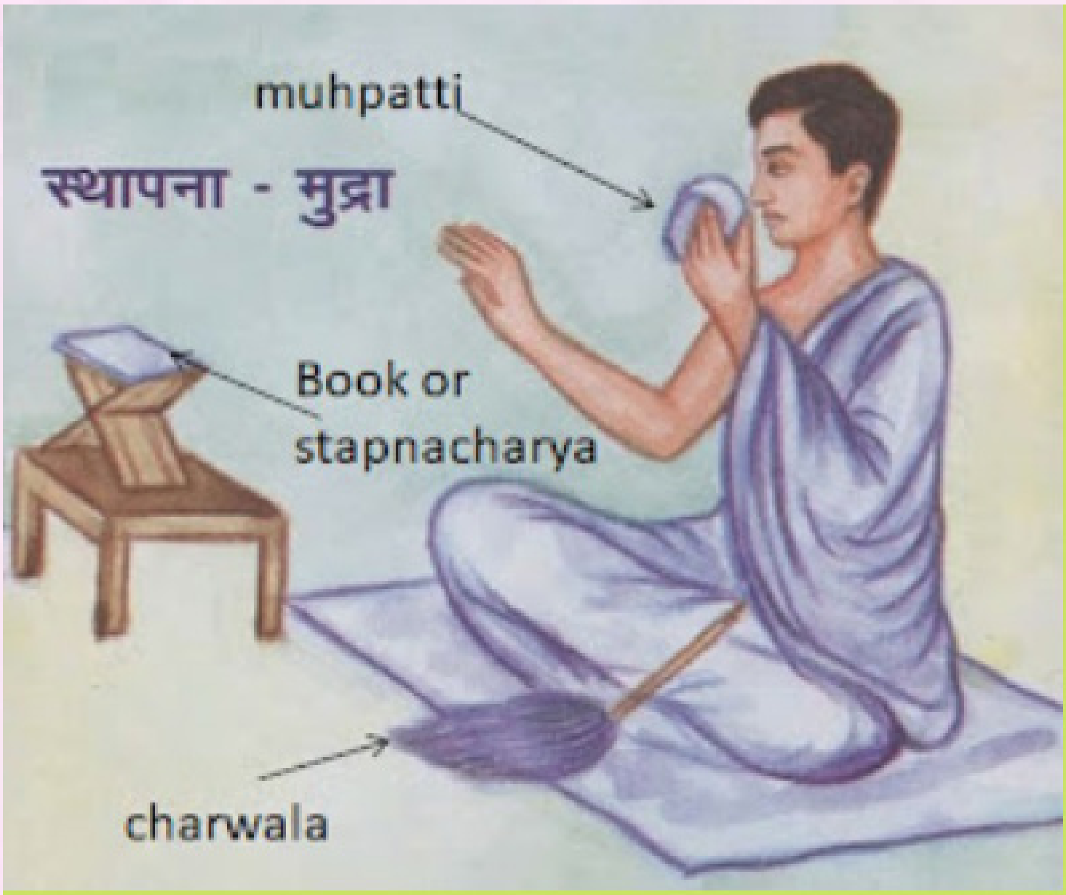

1. नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच-नमुक्कारो
सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं।

2. पंचिंदिय सूत्र

पंचिंदिय-संवरणो, तह-नवविह बंभचेर, गुत्तिधरो।
चउविह-कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो।1।
पंच-महव्वय-जुत्तो, पंचविहायार पालण-समत्थो।
पंच-समिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मज्झ।2।

विशेष- अगर स्थापनाचार्य जी हों तो नवकार तथा
पंचिदिय सूत्र पढ़ने की आवश्यकता नहीं।

अब खड़े होकर 'खमासमण सूत्र' का पाठ पढ़ते हुए पंचांग खमासमण दीजिये।

3. खमासमण अथवा प्रणिपात सूत्र

इच्छामि खमासमणो!
वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए,
मत्थएण वंदामि ॥

(खमासमण देते हुए दोनों हाथ दोनों घुटने तथा मस्तक भूमि से लगने चाहियें।)

4. इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं ।।
इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए ।।
गमणागमणे। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे,
ओसा उत्तिंग, पणगदग मट्टी-मक्कडा, संताणा-संकमणे।।
जे मे जीवा विराहिया।।
एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया।।
अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,
किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ
ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।

5. तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।।

6. अन्नत्थ (आगार) सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं,
उड्डुएणं, वाय- निसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए।।
सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।
ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।

खड़े-खड़े ही दोनों पावों के अंगूठों का आपस में चार अंगुल का अंतर रखकर और एड़ियों के पास कुछ कम अंतर रख कर अपने दोनों बाजू नीचे की तरफ सीधे करिये तथा अपनी आंखें ठवणी के ऊपर टिकाइये। बायें हाथ में चरवला तथा दायें हाथ में मुंहपत्ति पकड़नी होती है तथा मन ही मन जीभ तथा होंठ हिलाए बिना हिलने डुलने से रहित-एक लोगस्स का 'चंदेसु निम्मलयरा' तक या चार नवकार का कायोत्सर्ग कीजिए।)

7. लोगस्स (नाम-स्तव) सूत्र

लोगस्स उज्जो अगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।। 1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमईं च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे।। 2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल, सिज्जंस, वासुपुज्जं च
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।। 3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।। 4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय रय-मला पहीण-जर मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।। 5।।
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरूग्ग-बोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।। 6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागर वर गम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।। 7।।

(फिर खमासमण दीजिए)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।।

(अब पावों के बल बैठ कर मुंहपत्ती खोलते हुए कहिए)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सामायिक मुंहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं।

(मुंहपत्ति पडिलेहते हुए पहले कन्नी वाली साईड अपने दोनों हाथों में पकड़नी चाहिये। ध्यान रहे कि मुंहपत्ती पडिलेहण की इस विधि का सामायिक करते समय तथा सम्पूर्ण करते समय बराबर उपयोग हो।)

मुंहपत्ति पडिलेह कर फिर एक खमासमण दीजिये।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए,
मत्थएण वंदामि।।

(और इसी अवस्था में बैठे हुए थोड़ा झुक कर मुंहपत्ति को पलटते हुए)
मुंहपत्ती सहित दोनों हाथ मस्तक से लगाकर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं? इच्छं।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।।

फिर ऊपर बतलाए हुए के अनुसार निम्नलिखित पाठ पढिए

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सामायिक ठाउं? इच्छं।

(जब चरवला हो तो खड़े होकर मस्तक झुकाकर दोनों हाथ जोड़कर और यदि चरवला न हो तो बैठे-बैठे एक नवकार पढ़िये और कहिए)

इच्छकारी भगवन! पसाय करी सामायिक दण्डक उच्चरावो जी।

(यदि गुरुदेव जी विराजमान हों तो उनसे उच्चरावें या अपने से पहले किसी व्यक्ति ने सामायिक ली हो तो उससे उच्चरावें, अगर किसी ने भी न ली हो तो अपने आप निम्नलिखित पाठ पढ़ लेवें)

सामायिक लेने का 'करेमि भंते' सूत्र

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

पुनः ऊपर बताये अनुसार निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! बेसणे संदिसाहुं? इच्छं।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

फिर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! बेसणे ठाउं ? इच्छं ।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

फिर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

फिर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सज्झाय करूं? इच्छं।

(पुनः बैठ जाइये और दोनों हाथ जोड़ कर तीन नवकार पढ़िये और दो घड़ी (48 मिनट) तक स्वाध्याय करिए या माला गिनिये)

दर्शन के उपकरण व उनके चित्र

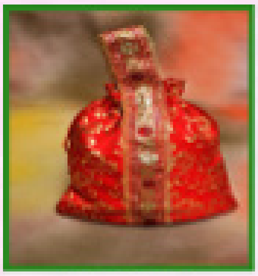
BATWO

KUNDI

PITTAL BALDI

DHOTI KHES

CHETNO

ORASIYO

KATASANU

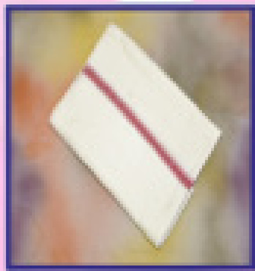
SANTHARO

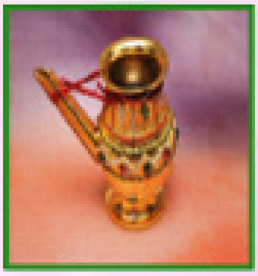
KALASH

AARTI

DEEPAK

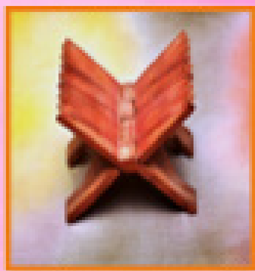
SAAPDO

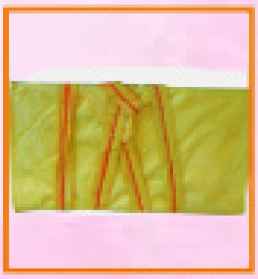
POTHI BANDHAN

CHAAMAR

POOJA SET

PUNJANI

OGHO MUHPATI

VALA KUNCHI

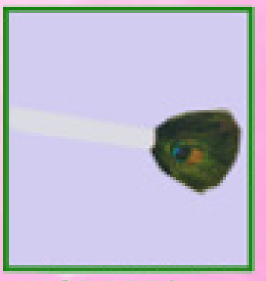
MOR PEECHHI

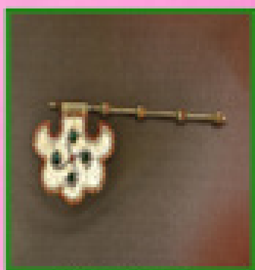
PANKHO

दर्शन के उपकरण व उनके चित्र

AKSHAT

PATRA

THALI-DANKO

GHANT

KESAR THALI

SUKHAD

KAMALI

ANGA LOONCHHNA

DHUPIYU

SUPDI-PUNJANI

TAR

POOJA KI PETI

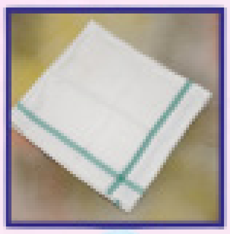
AASAN

GHADO

BAARASA SUTRA

PUSHPA

MANGAL DIVO

CHARAVALO

TRIGADU

POOJA KA RUMAL

STHAPANACHAARYA

DANDASAN

NAVKARVALI

DANDO

श्री वल्लभ गुरु के चरणों में

श्री वल्लभ गुरू के चरणों में,
मैं नित उठ शीश नमाता हूँ
मेरे मन की कली खिल जाती है,
जब दर्श तुम्हारा पाता हूँ ।।1।।
मुझे वल्लभ नाम ही प्यारा है,
इस ही का मुझे सहारा है।
इस नाम में ऐसी बरकत है,
जो चाहता हूँ सो पाता हूँ ।।2।।
जब याद तेरे गुण आते हैं,
दुःख दर्द सभी मिट जाते हैं।
मैं बन कर मस्त दीवाना फिर,
बस गीत तेरे ही गाता हूँ ।।3।।
गुरूराज तपस्वी महामुनि,
सिरताज हो तुम महाराजों के।
मैं इक छोटा सा सेवक हूँ,
कुछ कहता हुआ शरमाता हूँ ।।4।।
गुरू चरणों में हे अर्ज यही,
बढ़ती दिन-रात रहे भक्ति।
मेरा मानुष जन्म सफल होवे,
यही भक्ति का फल चाहता हूँ ।।5।।

HJ CREATIONS 8750222052